हिंदी का वैशिष्ट्य

डॉ मूर्ति मलिक
एसोशिएट प्रोफ़ेसर
भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय
खानपुर कलां, सोनीपत (हरियाणा)

प्राय: हम सुनते पढ़ते आए हैं कि भाषा मनुष्य के भावों व विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। हम जो कुछ भी सोचते हैं, विचार करते हैं तथा उसे क्रियान्वित करते हैं। उन सब का मूल आधार भाषा है। कार्य संपन्न होने की पहली कड़ी भी भाषा ही है। कोई भी कार्य पहले दिमाग में भाषा का आश्रय लेता है, फिर उसे वाणी के द्वारा व्यक्त किया जाता है और अंत में लेखन के माध्यम से स्थायित्व प्रदान करते हुए प्रत्यक्ष रूप से क्रियान्वित किया जाता है। कार्य पूरा होने पर वह उपलब्धि में परिवर्तित हो जाता है इस प्रकार मानव की समस्त उपलब्धियों का आधार भाषा ही है।

मानव से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है समाज व राष्ट्र की उन्नति या अवनति भाषा के माध्यम से ही होती है। जिस समाज व राष्ट्र की भाषा जितनी उन्नत व समृद्ध होगी। वह समाज व राष्ट्र भी उतना ही उन्नत एवं समृद्ध होगा। अत: भाषा समाज व राष्ट्र की पहचान भी है। इस दृष्टि से हिंदी भाषा पर चिंतन मनन करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी भारतवर्ष की भाषा है। लगभग हजारों वर्षों का इतिहास इसकी समृद्धि का परिणाम है। भारतवर्ष के समान ही इसका इतिहास भी गरिमामयी व समृद्धशाली रहा है। जिस प्रकार भारत को विश्व गुरु होने का सम्मान मिला है। उसी प्रकार हिंदी की जन्म दात्री संस्कृत को भी विश्व की अनेक भाषाओं की जननी स्वीकार किया गया है। हिंदी के रूप स्वरूप पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर इसकी अनेक विशेषताएं सामने आती हैं, जिसके कारण पूरे विश्व में इसकी अलग पहचान बनी हुई है। कुछ बिंदुओं को केंद्र में रखकर इसके हिंदी भाषा के वैशिष्ट्य को इस प्रकार रेखाकित किया जा सकता है। घर बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है और मां उसकी प्रथम गुरु। इस दृष्टि से हिंदी भाषा पर विचार करें, तो हम कह सकते हैं कि भारत के अधिकतर प्रांतों में हिंदी बोली जाती है। कुछ प्रांतों में हिंदी समझी जाती है तथा अन्य में भी किसी न किसी रूप में न्यून अधिक रूप में इसका प्रयोग होता है। भाषा के आधार पर संपूर्ण भारत वर्ष के प्रदेशों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम वे प्रदेश हैं, जिनमें हिंदी का प्रयोग होता है। इन्हें हिंदी भाषी प्रयोग क्षेत्र कहते हैं। अन्य को हिन्देतर के रूप में पहचान मिली हुई है। भारत के सभी प्रांतों में से 10 प्रांत ऐसे हैं, जिनमें हिंदी का प्रयोग धड़ल्ले से किया जाता है। इनमें न तो हिंदी में बोलने की समस्या है और न ही प्रयोग करने अर्थात लिखने में। संपूर्ण राष्ट्र की 70] जनता हिंदी को जानती, पहचानती व समझती है। इस आधार पर निसंकोच कहा जा सकता है कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। भले ही औपचारिक रूप से संविधान ने इसे स्वीकृति न दी हो। हमारा सीना गर्व से तन जाता है, जब हम देखते हैं की उत्तर पूर्व भारत में टैक्सी चलाने वाला भी हिंदी गाने सुनता वह गुनगुनाता है। इसके साथ ही जब देश की सीमाओं पर विदेशी शक्तियों के अतिक्रमण की बात आती है या सीमाओं पर घुसपैठ का समाचार पाकर दक्षिण भारत में रहने वाला भारतीय ''वंदे मातरम'' ''भारत माता की जय'' कहकर अपने राष्ट्र प्रेम को मुखरित करता है। वस्तुत: इन नारों के उद्घोष में हिंदी व हिंदुस्तान मुखरित होता है। इस प्रकार निसंदेह हिंदी राष्ट्रभाषा के पद पर स्वत: ही आसीन हो जाती है। इसे किसी शासनादेश की आवश्यकता नहीं रहती, जबकि राजभाषा बनने के लिए राजा की आज्ञा तथा विधि विधान की आवश्यकता होती है। यह भी कतई आवश्यक नहीं कि राष्ट्रभाषा राजभाषा भी हो। उदाहरणार्थ हमारे यहां समय-समय पर फारसी व अंग्रेजी राज भाषाएं तो रही हैं लेकिन राष्ट्रभाषा कभी नहीं रही अस्तु हजारों वर्षों से हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा रही है। यू कहने भर को वह हमारी राजभाषा भी है। 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का गरिमामय पद प्राप्त हुआ है। प्रभुता संपन्न राष्ट्र की एकता के लिए एक झंडा, एक प्रतीक, एक नेता होता है। इसी प्रकार उस राष्ट्र के लिए आदर्श व संसार की अभिव्यक्ति के लिए एक भाषा होती है। हिंदी को देश की मानसिकता ने राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान की है, किंतु राजनीतिक धरातल पर विस्तृत चर्चा के बाद उस को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

हिंदी विश्व की भाषा है। यह भारत के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों फिजी, मॉरीशस, कनाडा आदि देशों में

ISBN: 978-81-954645-0-0

बोली जाती है। इसलिए हिंदी को आज राष्ट्रभाषा तक सीमित न रखकर वैश्विक संदर्भ में उसके परिर्वतित रूप स्वरूप के साथ स्वीकार करना न्यायोचित व संगत होगा। विदेशों में अनेक शोधाथह्न व विद्याथह्न भारतीय संस्कृति को समझने के लिए हिंदी सीखने के लिए जागरूक हो रहे हैं। हिंदी की गति सरिता के समान निरंतर प्रवाहमान है। यह पठारो, पहाड़ों की भौगोलिक सीमाओं को लांघती हुई विश्व मंच पर स्थापित होने की क्षमता रखती है। हिंदी की मंदाकिनी में हर देसी विदेशी गोता लगाने के लिए लालायित है। यह भारतीय धर्म एवं संस्कृति का अभिन्न अंग होने के नाते हर भारतीय के गले का हार है।

हिंदी संस्कारों की भाषा है इसमें आत्मीयता की भावना है। जिस प्रकार ''मां" कहने से जन्म दात्री का बोध होता है, वात्सल्य भाव सजीव हो उठता है। जबकि दूसरी भाषा में अनुवाद करने पर वह भावना समाप्त हो जाती है। हिंदी हमारे मन, ह्रदय व आत्मा की भाषा है। हम कितने भी अंग्रेजीदा बन जाए किंतु अंतर की अभिव्यक्ति के लिए यह हमारी जुबान पर आ ही जाती है। अन्य किसी भाषा में हम अपने मन को कैसे उड़ेल सकते हैं। विदेशी भाषा में हम विदेशों में जाकर धन तो अर्जित कर सकते हैं, पेट की भूख तो मिटा सकते हैं, किंतु तृप्ति एवं आत्म संतुष्टि का अनुभव स्वभाषा से ही संभव है। हिंदी हमें जड़ों से जोड़ती है। जड़ों से जुड़ने की बात सूरदास के निम्न पद से समझी जा सकती है ---

''मेरो मन अनत कहां सुख पावे।

जैसे उड़े जहाज को पंछी फिरीजहाज पर आवै।"

भारतीय संस्कृति ''अतिथि देवो भव" के आधार पर विभिन्न भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने की शक्ति संजो चुकी है। इसकी उदारता एवं अन्य ताकि कारण अनेक विदेशी शब्दों का प्रयोग भी हिंदी में सहर्ष स्वीकार कर लिया गया है। संस्कार का सीधा संबंध ह्रदय से होता है। ऐसे में नागरी लिपि अभिव्यक्ति का सफल आधार बनती है। नागरी लिपि के माध्यम से हिंदी की बोधगम्यता अत्यंत उपयोगी है। इसलिए इसे संस्कारों की भाषा कहते हैं। निश्चय ही स्पष्ट अभिव्यक्ति और सरल, सहज बोधगम्यता से ज्ञानार्जन संभव है। ज्ञानार्जन सफलता का परिचायक है। बस आवश्यकता है। इस लिपि के माध्यम से हिंदी भाषा को एकाग्र मन से सीखने व ह्रदयंगम करने की। निश्चय ही हिंदी देश की धड़कन है तथा नागरी लिपि रक्त प्रवाहिनी धमनी तंत्र है।

हिंदी एक मानक व वैज्ञानिक भाषा है। देवनागरी में वर्णों का क्रम अत्यंत वैज्ञानिक है पहले स्वर आते हैं, जिन्हें कम उच्चारण क्षमता वाला व्यक्ति भी आसानी से बोल सकता है । उसके बाद व्यंजन आते हैं, जिनका क्रम मुख के अवयवों के अनुसार कंठ, तालु, मूर्धा, दंत औरओष्ठ्य आदि के अनुसार इनका उच्चारण किया जाता है अर्थात क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग में। अर्थात कंठ से शुरू होकर होठों पर आकर उच्चारण की प्रक्रिया संपन्न होती है। इससे अधिक वैज्ञानिक लिपि का कोई अन्य उदाहरण हो नहीं सकता। अत: निश्चित रूप से कह सकते हैं कि हिंदी की लिपि देवनागरी विश्व की अन्य लिपियों की तुलना में अधिक मानक वह वैज्ञानिक है।

हिंदी की सहज अधिगम क्षमता में नागरी लिपि की विशेष भूमिका है। जनसामान्य के अनुसार नागरी को हिंदी की लिपि कहा जाता है। जो कि उचित नहीं है। नागरी में ही वैदिक, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, मराठी, कोंकणी आदि भाषाएं लिखी जाती है। यह भी सर्वविदित है कि जिस देश अथवा क्षेत्र में जिस भाषा और लिपि का बहुल प्रयोग होता है वह भाषा और लिपि अधिकांश लोगों के लिए सहज सरल और व्यवहारिक सिद्ध होती है। इस दृष्टि से विचार करें तो नागरिक का प्रयोग क्षेत्र हिंदी से भी कहीं अधिक विस्तृत है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का साहित्य भी इस लिपि में है, तो महाराष्ट्र की मराठी गोवा की कोंकणी आदि भाषाएं भी इस लिपि में ही लिखी जाती हैं। नागरी लिपि की एक अन्य विशेषता यह भी है कि प्रत्येक वर्ण के लिए एक ही उच्चारण है अर्थात नागरिक का कोई एक वर्ण लिख दिया जाए और सैकड़ों व्यक्तियों से उस वर्ण का उच्चारण कराएं तो सब में समानता होगी। इतना ही नहीं किसी एक वर्ण को शब्द के आदि, मध्य अथवा अंत में रखे तो उच्चारण वही रहेगा।

इसका मानक परिनिष्ठित रूप समाज को सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर जोड़ता है। मानक भाषा का प्रयोग करके हम एक दूसरे तक अपनी बात सुचारू ढंग से संप्रेषित कर सकते हैं। वास्तव में जो हमारा आशय होता है। हिंदी में

यह क्षमता है कि निश्चित अर्थ संप्रेषित किया जा सके। इसके परिनिष्ठित एवं परिमार्जित रूप अपनाने से व्यक्ति की अपनी पहचान बनती है। इसकी उदारता और नमनीयता के कारण मानक हिंदी स्वयं समय को चुनौती के अनुरूप ढालती व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुजरती रहती है। परिवर्तन एक एवं सतत प्रक्रिया है इसलिए हिंदी जैसे-जैसे नए रूपों में प्रवेश करेगी वह स्वयं को और अधिक सक्षम एवं सार्थक बनाती रहेगी। दुनिया की अन्य सक्षम भाषाएं भी अपने संक्रमण काल को पार करके इस स्थिति में पहुंची हुई हैं।

हिंदी अपनी सहज अधिगम क्षमता एवं बोधगम्यता के कारण अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। उसको सीखना बहुत सरल व सुगम है। इसमें जैसा उच्चरित किया जाता है, वैसा ही बोला जाता है। इसकी यही विशेषता इसे अनेक उच्चारण एवं लेखन के दोषों से मुक्त रखती है। हिंदी पर यह आरोप लगाया जाता है इसमें "र" व "श" ध्वनियां विभिन्न प्रकार से लिखी जाती हैं लेकिन एकरूपता को अपना कर इस दोषारोपण से भी बचा जा सकता है ।

वर्तमान समय को वैज्ञानिक, तकनीकी एवं मीडिया युग आदि अनेक नामों से अभिहित किया जाता है। ऐसे में हिंदी का एक विशेष रूप सामने आया है ।निश्चय ही प्रयोजनमूलक हिंदी युग की अपेक्षाओ की पूर्ति के लिए एक विकसित रूप है। सामान्य भाषा, बोलचाल की भाषा और साहित्य भाषा में आनंद की अनुभूति होती है, जबकि प्रयोजनमूलक हिंदी में ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों का ज्ञानार्जन निश्चित होता है। इसमें ज्ञानार्जन के बाद रसास्वादन व आनंद की अनुभूति होती है। ऐसी भाषा में एकरूपता तथा विषय से संबंधित भंगिमा ज्ञानार्जन का द्वार खोलती है। प्रयोजनमूलक हिंदी में कंप्यूटर, अनुवाद, मीडिया तथा कार्यालय हिंदी आदि के कार्य पढ़ने व ज्ञान प्रदान करने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की हिंदी मानव मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन का आधार तो है ही । प्रयोजनमूलक हिंदी रोजगार जगत में सफलता प्रदान करने का ज्ञानार्जन प्रदान करने वाली प्रभावी भाषा है।

वर्तमान युग में भारतवर्ष संसार के लिए एक बड़ा बाजार क्षेत्र बन गया है। यह सर्व विदित है कि भारत के बाजार में उतरने के लिए हिंदी को अपनाना अनिवार्य है। इसलिए अंग्रेजी में भी हिंदी का रंग झलकता है विदेशी कंपनियों तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों को यह समझ में आ गया है कि उन्हें अपने उत्पाद यदि भारत में बेचने हैं तो हिंदी सीखना उनके लिए अनिवार्य है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हिंदी एवं उस की लिपि देवनागरी अनेक गुणों से संपन्न है। सका अपना वैशिष्ट्य है। इसकी वैज्ञानिकता में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता। राजभाषा, राष्ट्रभाषा संचार भाषा, माध्यम भाषा, संपर्क भाषा के रूप में इसका प्रभावी रूप सामने आता है। अंत मे --

"वर्तमान स्थिति को बदलना होगा
मंजिल पर पहुंचना है तो चलना होगा
है रात अंधेरी तो दीए की लो को
सूरज के उभरने तक चलना होगा"

ISBN: 978-81-954645-0-0